CHAPTER 5, ज्योतिबा फुले
PAGE 60, अभ्यास

11:5:1:प्रश्न-अभ्यास:1

1. ज्योतिबा फुले का नाम समाज सुधारकों की सूची में शुमार क्यों नहीं किया गया? तर्क सहित उत्तर लिखिए।

उत्तर- तर्क अनुसार यदि देखा जाये तो ज्योतिबा फुले हमेशा उन लोगो का विरोध करते थे जो उच्चवर्गीय समाज का प्रतिनिधित्व करते थे । वे हमेशा ब्राह्मण समाज द्वारा फैलाए गए आडम्बरों और रुढियों का विरोध करते थे ।और वो हमेशा सभी को समान अधिकार देने वाली बातों के समर्थक थे । यदि उन्हें समाज सुधारकों की सूचि में रख दिया जाता तो समाज की दशा कब की कब बदल दिए

होते । जो लोग विकसित वर्ग का जो प्रतिनिधित्व करते थे और अपने आप को समाज का सुधारक मानते थे वे नहीं चाहते थे । अतः उन्होंने समाज सुधारकों की सूची में ज्योतिबा फुले का नाम ना रख कर उनके द्वरा समाज हित में किये गए कार्यों को दबाने का प्रयास किया ।

11:5:1: प्रश्न-अभ्यास:2

2. शोषण-व्यवस्था ने क्या-क्या षड्यंत्र रचे और क्यों?

उत्तर- शोषण व्यवस्था ने निम्नलिखित षड़यंत्र रचे :-

(क) उनके परिवार तथा समाज ने उनका बहिष्कार किया ।

(ख) उनके बाहर निकलने पर लोगों द्वारा उनको गालियाँ दी जाती .उन पर थूका जाता तथा उन पर गोबर फेंका जाता ।

(ग) उनके सामजिक कार्यों को रोकने के लिए अनेक प्रकार के रोड़े अटकाए गए ।

11:5:1: प्रश्न-अभ्यास:3

3. ज्योतिबा फुले द्वारा प्रतिपादित आदर्श परिवार क्या आपके विचारों के आदर्श परिवार से मेल खाता है? पक्ष-विपक्ष में अपने उत्तर दीजिए।

उत्तर- पक्ष: ज्योतिबा फुले द्वारा प्रतिपादित आदर्श परिवार की यह सुन्दर कल्पना है । उनके अनुसार यदि हर धर्म के लोग एक ही परिवार में रहेंगे तो जीवन स्वर्ग के समान बन जाएगा । यदि सभी धर्मों के लोग एक साथ प्रेमपूर्वक रहेंगे तो कभी भी

मतभेद की स्थिती नहीं आएगी । इस तरह एक परिवार की तरह रहने पर समाज तथा देश एकजुट हो जायेगा । जीवन आनंदमय हो जाएगा । हर धर्म के संस्कार बच्चे को एक ही स्थान से मिला करेंगे ।

विपक्ष : अगर देखा जाये तो ज्योतिबा फुले द्वारा प्रतिपादित आदर्श परिवार मेरे विचारों से व मेरे आदर्श परिवार से मेल नहीं खाता है । मैं कभी भी परिवार को धर्म के रूप में नहीं रखता । ज्योतिबा फुले द्वारा जिस आदर्श परिवार की कल्पना की गयी है वह पुरे संसार को एक छत के नीचे लाने के लिए की गयी है । लेकिन मेरी नजर में ऐसा नहीं है अगर हम अलग - अलग धर्म को भी मानते है अगर हम अलग - अलग घरो में भी रहते है तो अलग रहते हुए भी हमें एक दुसरे के धर्मो की इज्जत करनी चाहिए यदि हम एक छत के निचे न भी रहे तब भी

समाज में बदलाव लाने के लिए हमें एक साथ मिल कर कार्य करना चाहिए ।

11;5:1: प्रश्न-अभ्यास:4

4. स्त्री-समानता को प्रतिष्ठित करने के लिए ज्योतिबा फुले के अनुसार क्या-क्या होना चाहिए?

उत्तर- स्त्री-समानता को प्रतिष्ठित करने के लिए ज्योतिबा फुले के अनुसार निम्नलिखित बातों का होना आवश्यक है :-

(क) स्त्रियों को पुरुषों के समान जीने का अधिकार तथा स्वतंत्रता रहने का अधिकार देना चाहिए ।

(ख) स्त्रियों को पुरुषों के समान ही होने चाहिए ।

(ग) स्त्रियों को पुरुषों के समान शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार होना चाहिए ।

(घ) विवाह के समय बोले वाले मन्त्रों में ब्राह्मणों का स्थान समाप्त हो जाना चाहिए तथा ऐसे वचन बुलवाने चाहिए जिसमें दोनों के अधिकार हों । ऐसे वचनों को कोई स्थान नहीं देना चाहिए ,जिसमें पुरुष को मनमानी का अधिकार मिले और स्त्री को गुलामी का ।

11:5:1: प्रश्न-अभ्यास:5

5. सावित्री बाई के जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन किस प्रकार आए? क्रमबद्ध रूप में लिखिए।

उत्तर- सावित्री बाई के जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन उनके विवाह के बाद आये :-

(क) उनके पति ने सबसे पहले पढाना आरम्भ किया । इसके लिए उनके पति ज्योतिबा फुले ने मराठी तथा अंग्रेजी भाषाओं की शिक्षा दी ।

(ख) उसके पश्चात उन्होंने अपने साथ लायी पुस्तक पढ़ा ।

(ग) अपने पति के साथ उन्होंने पहले कन्या विद्यालय की स्थापना की ।

(घ) विद्यालय खोलने के कारण उन्हें सास तथा ससुर ने घर से निकाल दिया ।

(ङ) इसके बाद तो उन्होंने शुद्ध जाति के लोगों के लिए निडर होकर कार्य करना आरम्भ कर दिया ।

11:5:1 प्रश्न-अभ्यास:6

6. ज्योतिबा फुले और सावित्री बाई के जीवन से प्रेरित होकर आप समाज में क्या परिवर्तन करना चाहेंगे?

उत्तर- मेरे हिसाब से मैं समाज में निम्नलिखित परिवर्तन करना चाहूंगी :

1. घरेलु हिंसा को बिलकुल बंद करना चाहूंगी ।
2. घरेलु हिंसा का सबसे बड़ा कारण शराब और किसी भी प्रकार का नशा होता है । इसका बहिष्कार अत्यंत आवश्यक है ।
3. दहेज़ प्रथा कई जगह आज भी समाप्त नहीं हुआ उपहार के नाम पर आज भी यह कई जगह चल ही रहा है उसपे रोक लगाना चाहूंगी ।

11:5:1: प्रश्न-अभ्यास:7

7. उनका दांपत्य जीवन किस प्रकार आधुनिक दंपतियों को प्रेरणा प्रदान करता है?

उत्तर- आज के समय में दाम्पत्य जीवन में छोटी छोटी बातों पर झगडे और कलेश हो जाते हैं । साथ

मिलकर चलना तो कठिन हो जाता है । अहंकार की भावना रिश्तों के मध्य दीवार बन जाती है ।लेकिन जब हम ज्योतिबा फुले और सावित्री बाई को देखते है तो उनसे प्रेरणा मिलती है । हमें अपने जीवन साथी के साथ कंधे से कंधे मिलाकर चलना चाहिए । एक दुसरे के सपने को अपना बना लेना चाहिए । जीवन की डगर में आने वाली कठिनाइयों को एक होकर झेलना चाहिये । एक दुसरे पर अटूट विश्वास करना चाहिए ।

11:5:1: प्रश्न-अभ्यास:8

फुले दंपति ने स्त्री समस्या के लिए जो कदम उठाया था, क्या उसी का अगला चरण 'बेटी बचायो, बेटी पढायो ' कार्यक्रम है?

उत्तर- ज्योतिबा फुले और उनकी पत्नी ने उस समय हो रहे स्त्रियों के शोषण पर सवाल उठाया था वे

लोग चाहते थे की समज में स्त्रियों को उतना ही अधिकार मिले जितना पुरुषों को मिला है उस समय के ब्राह्मण समाज ने स्त्रियों के प्रति रुढ़िवादी सोच बना राखी थी वे उस सोच को समाज से मिटाना चाहते थे वो हमेशा कहते समाज में शूद्रों तथा महिलों के अधिकारों का क्षरण कर उन्हें गुलाम बनाकर रखा गया हैं ।

लेकिन देखा जाये तो उनकी सोच और बेटी बचाओ ,बेटी पढाओ की सोच में अंतर है क्युकी आज के समाज में महिलाओ को भी उतना ही अधिकार प्रदान किया गया है जितना पुरुषो को पहले स्त्रियों का शोषण होता था लेकिन आज के समाज में उनके शोषण के खिलाप शख्त कानून बनाये गए है जबकि 'बेटी बचाओ, बेटी पढाओ कार्यक्रम छोटी बच्चियों की भ्रूण हत्या और उनकी शिक्षा के सन्दर्भ में चलाया गया है इसलिए ये कहा जा सकता है की दम्पति

ने स्त्री के लिए जो कदम उठाया था उसका अगला चरण ‘बेटी बचाओ, बेटी पढाओ ‘कार्यक्रम नहीं है ।

9. निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिएः
(क) सच का सवेरा होते ही वेद डूब गए, विद्या शूद्रों के घर चली गई, भू-देव (ब्राह्मण) शरमा गए।
(ख) इस शोषण-व्यवस्था के खिलाफ़ दलितों के अलावा स्त्रियों को भी आंदोलन करना चाहिए।

उत्तर

(क) ज्योतिबा फुले कहते हैं कि जब से शूद्र जाति वाले लोगों ने शिक्षा के महत्व को समझकर शिक्षा ग्रहण करना आरंभ किया है, तब से ब्राह्मण समाज का अंत आ गया है। वेदों के नाम पर इन्होंने समाज के अन्य लोगों को दबाकर रखा। लेकिन आज स्थिति बदल गई है। अब वेदों का महत्व समाप्त हो गए हैं। शूद्रों के पास ज्ञान की शक्ति देखकर ब्राह्मण समाज लज्जित हो गया है। जिसपर इतने वर्षों से उन्होंने अपना अधिकार बनाए रखा था, अब वह उनका नहीं रहा है। शिक्षा का अधिकार सबके लिए है और अब सब उसका फायदा उठा रहे हैं।

(ख) ज्योतिबा फुले कहते हैं कि सदियों से ब्राह्मण समाज ने शूद्रों के साथ-साथ स्त्रियों का भी शोषण किया है। उन्होंने स्त्रियों को कभी सिर नहीं उठाने दिया। पत्नी धर्म के नाम पर उन्हें गुलाम बनाकर रखा। अतः शूद्रों के अतिरिक्त स्त्रियों को भी अपने अधिकारों के लिए ब्राह्मण समाज का विरोध करना चाहि। वे तभी अपने अधिकारों को पा सकेगीं।

10. निम्नलिखित गंद्याशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए-
(क) स्वतंत्रता का अनुभव .... हर स्त्री की थी।
(ख) मुझे 'महात्मा' कहकर .... अलग न करें।

उत्तर

(क) प्रसंग- प्रस्तुत गद्यांश सुधा अरोड़ा द्वारा लिखित रचना ज्योतिबा फुले से ली गई है। प्रस्तुत पंक्ति में ज्योतिबा फुले स्त्रियों को अपनी शोषण अवस्था से उठकर अपने अधिकार पाने के लिए उत्साहित करते हैं। वे इसके लिए विवाह में ऐसे मंत्रों का निर्माण करते हैं, जिसमें स्त्री को पुरुष के समान अधिकार मिले।
व्याख्या- विवाह के समय मंगलाष्टक बोले जाते हैं। पहले में स्त्री अपने पति से कहती है कि हम स्त्रियों की बचपन से स्वतंत्रता ले ली जाती है। मृत्यु तक इस गुलामी युक्त जीवन को स्त्रियाँ जीने के लिए विवश होती हैं। अतः तुम कसम खाओ कि मुझे मेरे अधिकार दोगे और अपने समान स्वतंत्रतापूर्वक जीने दोगे। अर्थात तुम्हें जिस प्रकार जीने का अधिकार है, वैसा ही अधिकार मुझे भी विवाह के बाद मिलेगा। लेखिका कहती है ज्योतिबा फुले ने जो कसम एक विवाहिता स्त्री के लिए तैयार की थी, वह हर स्त्री को चाहिए थी। क्योंकि वह भी गुलामी भरे जीवन से मुक्ति पाना चाहती थी।